पड़ता है। अनुयायियों के हाथ की तलवार से ही सच्चे से सच्चे सिद्धांत की गर्दन का सफाया हो जाता है इतिहास के द्वारा ऐसी ऐसी बातों का भी पता लगता है कि एक समय में जिस सिद्धांत का प्रचार तो अलग रहा केवल नाम मात्र ही लेने से फांसी की सज़ा भोगनी पड़ती है दूसरे समय में वही सिद्धांत किसी जाति विशेष को वा देश विशेष को नहीं बल्कि दुनिया को मान्य होसकता है। प्रचारकों के प्रबल प्रयत्न के सामने सत्य की कुछ भी नहीं चलती, वह विचारा सत्य वे बदले असत्य के नाम से कलंकित हो जाता है। 'सत्ये नास्ति भयंक्वचित्' की युक्ति बेचारी दुम दबाये और मुंह छिपाये इधर उधर लुकती छिपती फिरती है। पाव बिठाना तो अलग रहा उसके आंसू पोंछने को भी कोई तैयार नहीं होता। इसी लिये प्रत्येक विचार शील पुरुष की जीवनी का सब से बड़ा कार्य अपने माने हुए सिद्धांतों की रक्षा करना और प्रचार करना होता है। बुद्धिमानों ने मंतव्य के संमुख जीवन को हमेशा तुच्छ माना है। दुनिया में जब कभी घोर संग्राम हुए हैं और ख़ून की नदियां बही हैं वे सब इसी के लिये। निकलङ्क देव का मारा जाना, बौद्धों का हिन्दुस्तान से कूंच करना, ईसा को फांसी लगना, इस बात के ज्वलंत दृष्टांत हैं यदि अनुभवी पाठक इस उपर्युक्त कथन

की सत्यता की तरफ़ ध्यान देकर और भी सर्वाङ्गीण दृष्टांत ढूंढना चाहेंगे तो उनको पता लगेगा कि वर्तमान परिचित दुनियां में प्रचलित भूगोल भ्रमण भी एक ऐसा सिद्धांत है जो कि प्रचारकों के प्रबल प्रयत्न और अगम्य साहस के द्वारा विपक्षी सत्य सिद्धांत का गला घोट कर प्रत्येक पुरुष की नस नस में घुस गया है। और जिसने बडे बडे प्रोफेसरों तक के दिमाग़ों को घुमा कर अचलों में सचला का बोध करा दिया है और अपनी तरफ़ खींच डाला है।

जिन महाशयों को इस कथन की सत्यता पर सन्देह न हो उनसे हमारा परोक्ष रूप में सविनय निवेदन है कि भूगोल भ्रमण के विषय में जो शङ्कायें इस पुस्तक में लिखी जांयगी उन का उत्तर देकर अनुग्रहीत करें।

कोई कोई लिखने के प्रेमी यह कहते हैं कि जगत् भर में जो पृथ्वी सूर्य्य चन्द्र तारे आदि हैं उन की दशा सदैव एकसी नहीं रहती जैसे नदी ग्राम आदिकों की व्यवस्था पलटती रहती है। इस कारण सर्व भूव्यवस्था वा गगन व्यवस्था का ठीक नहीं है। जिस विद्वान ने जहां तक तलाश किया और उस की समझ में आया वैसा लिख दिया है। यह माना तुम्हारी भी समझ में जो आया सो लिख दिया परन्तु ऐसे लिखने वालों के

लिखने पर एक निश्चित विश्वास करना एक बड़े भारी अन्धेरे में रत्न का खोज करना है, क्यों कि वह तलाश करने वालों का ज्ञान पूर्ण नहीं है।

इसी प्रकार अन्य कहते हैं कि सर्व पदार्थ कारण रूपता से एक रूप ही हैं व्यवस्था पलटना वास्तविक नहीं है ऐसे परस्पर विरोध होने से उन का लिखना न लिखने के समान है। जब कोई कुछ और कोई कुछ कहे तब किस को सत्यार्थ और किस को असत्यार्थ मानें? इस लिये उन पुरुषों का कहना सत्यार्थ नहीं।

जिसके मुंह में से अपनी संकल्प करी वार्ता निकल गई वह उस ही का पक्षपाती होकर उस का साधन ढूंढता रहता है जैसे चार वाक्य के विषय भोग की चाह में आया—कि जीव और जीव के परलोक कोई नहीं हैं न कोई परजन्म परलोक है, न व्रत तपादि स्वर्ग के कारण, कोई विषय भोग नरक के कारण हैं, इस लिये सदैव जैसे बने विषय-भोग कर जब तक जीवना तब तक सुख भोग कर सुखी रहना। इस संकल्प से ऊर्द्ध में स्वर्ग और अधो में नर्कादिक की व्यवस्था दूर करने के लिये पृथ्वी गोल घूमती मान कर स्वर्ग नर्कादिकों को अनेक मन तरंग साधनों से हटाया है—यह विचार ठीक नहीं है। जीव है, परलोक है, पुण्य है, पाप है, उन के फल स्वर्ग नर्क हैं, लोक रचना है, यह सर्व

सर्वज्ञ के ज्ञान कर प्रत्यक्ष हैं। और छद्मस्थों को आगम उनमान प्रमाणों से जाने जाते हैं। और जिस के प्रत्यक्ष ही नहीं तब उस का विधि निषेध कैसे कर सकता है? और विधि निषेध करे भी तो अल्पज्ञ होने से उसके कथन में अनेक शंका होती हैं। इस से यही निरधार होता है कि निर्धार रूप वाक्य उसी वक्ता के माने जांयगे जो सर्वज्ञ और रागद्वेप रहित (वीतरागी) हो, ऐसे प्रथम वक्ता ही का खोज करना परमावश्यक है और उस ही के विश्वास पर श्रद्धान करना सत्य मार्ग है। अल्पज्ञों के जो विषयाभिलाषी रागद्वेष अज्ञान कर सहित हैं उन के वचनों पर प्रतीति लाना विचार वालों का कार्य्य नहीं है इसी के लिये यह भू० भ्र० वा० जो नर्क स्वर्ग जीव आदि के लोप करने वाले हैं उन के माने सिद्धान्तों पर विवेचना की जाती है आशा है कि विद्वान निष्पक्ष होकर इस पर विचार करेंगे।

॥किंच॥ संसार में अनेक मत प्रचलित हैं जो अपने को आस्तिक मानते हैं। वह प्राय: पृथ्वी नर्क स्वर्ग मोक्ष आदि स्थानों को मानते हुए पृथ्वी को समधरातल, स्थिर ही मानते हैं। उसी में नीचे नर्क ऊपर स्वर्ग मोक्ष बराबर में द्वीप, समुद्र, सुमेरु आदिक अनेक रचना होना सम्भवित है। ज्योतिष चक्र को चर मानते हैं जिस को अपने२ मूल शास्त्रों

के कथन से श्रद्धान्त करते हुए उस मत पर आरूढ़ रहते हैं। उन शास्त्रों की प्रमाणता देकर पृथ्वी को समधरातल भ्रमणहीन करती हुई ही प्रमाणता में लाते हैं। इन मत वालों के विरुद्ध पृथ्वी गोल है भ्रमण करती है ऐसे कहने वालों के वचनों के सुनने से बिना विचारे अपने ऋषि प्रणीति वचनों में शङ्का कर कर के अपने सिद्धान्तों को अप्रमाण मानते हैं यह उन की नितान्त भूल है। इस कारण स्थिर पृथ्वी को मानने वालों को अपने शास्त्रों पर आरूढ़ होकर निश्शङ्क होना ही योग्य है। यदि अपने शास्त्रों में शङ्का है तो वह उस सशङ्कित शास्त्र के अनुयायी नहीं हो सकते? व्यर्थ क्यों अपने को उस शास्त्र का अनुयायी बन कर छल करना? तुरन्त उस मत का त्याग करना ही निष्कपटता है। जैन, वेदानुयायी, मुहम्मदी, वैष्णव, ईसाई बन कर क्यों लोक रंजना करते हो? क्यों कि जिन के मूल शास्त्रों में पृथ्वी समधरातल स्थिर लिखी है उनके शास्त्रों की हम प्रमाणता देते हैं, उस का विचार करो। यदि वह सत्य है तो उस पर विश्वास करो असत्य है तो उस मत को असत्य समझ कर छोड़ दो। अन्तरङ्ग में अश्रद्धा और बाह्य उस की श्रद्धा कर के पुत्कार करना निष्कपट मत वालों का काम नहीं है।

इन सब से अधिक जैन मतावलंबियों पर

आक्षेप है कि वह अपने जैन धर्म को बड़ा उत्तम मोक्ष मार्ग समझ कर जैन शास्त्रों पर विश्वास कर सम्यक् श्रद्धानी का तुर्रा लगा कर मुख फुलाते हैं। जिन्हों ने सर्वतो भाव से पृथ्वीको अचला माना है वह क्यों इस भू घूमती दौड़ती पर विश्वास कर आप और अपने बालकों को जैन विरुद्ध शिक्षा दिला कर क्यों नहीं जैन मत को छोड़ते हैं ? किन्तु छोड़ते ही हैं भावार्थ वह कपटी अजैन हैं किसी खोटी वासना से उन्हों ने अपना नाम जैन बना रखा है वर्तमान में अनेक मत प्रचलित हैं यदि उन के मत देखे जांय तो बहुमत सम्मति यही है कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य्यादि ज्योतिष चक्र भ्रमण करता है और यही अनुभव में भी आता है। इस कारण बडे २ गणितादि के जानने वाले विद्वानों ने पृथ्वी को अचला कहा है और सूर्य्यादि भ्रमण करता बड़ी युक्ति वा आगम से दिखाया है । उसी को आगे भू० भ्र० भ्रान्ति द्वितीय भाग में लिखेंगे।

किंच, प्रिय पाठको ! जैन नामधारी जैनानुयायी जैन सिद्धान्तों से अपरिचित रहते हुवे अपने आचार्यों के माने हुए सिद्धान्तों को भूगोल भ्रमण वादियों की नूतन चमक दमक में फंस कर जैन शास्त्रों को घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं और श्रद्धान से हाथ धो बैठे हैं । जिस से जैन सिद्धान्त

केप्रकाश्य लेखों पर दृष्टिपात भी नहीं करते । देखो जम्बूद्वीप प्रगुप्ति आदि महान ग्रन्थों में पृथ्वी को स्थिर अनेक रचना धरने वाली मानी है। जिस के नाम ही अचल अचला स्थिरा निश्चला आदि स्थिर-पने को प्रगट करते हैं, उस को वह घूमती हुई सूर्य्य की प्रदक्षिणा में दौड़ती मान विचार बैठे हैं अथवा सूर्य्य प्रगुप्ति आदि ग्रन्थ जिन में सूर्य्य की चाल १८३ तरह की उस के घूमने से दिन रात्रि का होना और दक्षिणायन उत्तरायन के होने से दिन रात्रि का घटना वढ़ना समय ऋतु आदि का परिवर्तन युक्ति सहित वर्णन किया गया, तिस को वह न बिचार कर सूर्य्य को स्थिर मान बैठे हैं। ऐसे ही चन्द्र प्रगुप्ति आदि शास्त्रों में स्पष्ट प्रकाशित कर दिया है कि चन्द्रमा स्वयं अनेक किरणों का धारी क्रान्ति मय है, वा चन्द्रग्रहण सूर्य्यग्रहण राहू केतु के द्वारा होते हैं और उन की दूरी आदि का कथन भिन्न २ स्पष्ट दिखाया है। जिस को न समझ कर चन्द्रमा क्रान्ति रहित है सूर्य्य की किरणों से क्रान्तिवान होता है, पृथ्वी की सदैव प्रदक्षिणा देता, समुद्र के जल को ऊपर खींचता रहता है आदि अनेक विकल्प कर बैठे हैं। जिन को ध्यान पूर्वक विचारने से अनेक शङ्का उत्पन्न होती हैं, तिन को न समझ विचार कर तथा जैन सिद्धान्तों को न देख कर उन को संदेह की दृष्टि कर से देखने

लगे हैं। ऐसी अवस्था होते हुए अपने को ऊंच कोटी के जैन बनने की चेष्टा समाज में दिखा कर अपना मान पुष्ट करते हैं। क्या उन्हों ने इसी को मोक्ष (कल्याण) का मार्ग समझा है?

नहीं, नहीं, मित्र वर्गो! यदि तुम जैन कुल में उत्पन्न होकर जैन धर्म को अपना हितकारी समझते हो तो आलस छोड़कर पृथिवी द्वीप समुद्र सूर्य चन्द्र तारे आदि के कथन करने वाले जिनका अर्थ गूढ़ है करोड़ों पदों के धरने वाले ऐसे लोक विन्दु आदि शास्त्रों का समागम न होने से वा मन्द बुद्धि होने से उनका अभ्यास न हो सके तो जिन में सामान्य कथन किया है ऐसे त्रैलोक्य प्रगुप्ति वा त्रैलोक्य सार सिद्धांत सार, श्लोक वार्तिक आदि ग्रन्थों का अभ्यास कर यथार्थ पदार्थों को विचार के, जैन शास्त्रों में शङ्का छोड़ अपने कल्याण के मार्ग में शिथिल मत होओ। तुम को सत्य जैन धर्म से परांमुख होना योग्य नहीं है।

यहां पर यह कथन किसी की निन्दा वा प्रशंसा करने के प्रयोजन से नहीं लिखा जाता है केवल सत्यार्थ स्वरूप पदार्थों के निर्णय करने को लिखा जाता है और इस स्थल में हम यह लिखे बिना भी न रहेंगे कि जो सूक्षम परमाणु आदि और अन्तरित जो राम रावणादि वा दूरार्थ सूर्य्य ग्रह

तारे आदि पदार्थों का सत्यार्थ रूप कहना, सर्व के ज्ञाता (सर्वज्ञ) वा निस्पृही (वीतरागी) के बिना असम्भव है। और अल्पज्ञ अनेक प्रकार सङ्कल्प कर अनेक हेतुओं की घड़न्त से जिन २ पदार्थों को कहते हैं उन ही को दूसरे नवीन वक्ता परिवर्तन कर देते हैं। फिर उस को भी तीसरे परिवर्तन कर देते हैं। सो यह वार्त्ता सत्यार्थ ही है। सर्वज्ञ के वाक्य बिना अल्पज्ञों के वाक्य का निर्वाह कैसे होय ? जिन के मत में सर्वज्ञ नहीं माना है वह सूक्ष्म अन्तरित दूरार्थ पदार्थों को केवल मन घड़न्त युक्तियों से कैसे कह सकते हैं ? यदि कहैं भी तो दूसरा उन को पलट देता है। यही अवस्था इस समय भू० भ्र० मत धारियों की हो रही है जो प्रति वर्ष नवीन २ पुस्तकें परिवर्तन रूप में आरही हैं। जिन में अनेक परस्पर विरोध रूप कथन हैं जो कि पी० ए० जौगरफ़ी प्रथम भाग में दिखा चुके हैं।

पी. एल. जौगरफ़ी की
अनेक सहनानी (निसानी)

नं० नम्बर (संख्या) (गणती)।

भूगो० भूगोल भ्रमणवादी।

वादी० वादी जो भूगोल भ्रमणवादी कहै।

प्रति० प्रतिवादी जो भूगोल भ्रमणवादी के प्रति सन्मुख कहै।

किंच० यह कह चुके और भी कुछ कहते हैं।

दोषों की सहनानी [निशानी]

सम० समदोष उसे कहते हैं जो स्वपक्ष और विपक्ष में समान होय जैसे कहना कि गोल पृथ्वी पर ऊंचे स्थान से अधिक दीख पड़ता है जैसा नं० ६

मन० मनघड़न्त दोष उसे कहते हैं जब अपने पक्ष में दोष आया तब मन में आया सो कह दिया जैसे पृथ्वी के ऊपर आकाशी पदार्थों को वायु मण्डल पृथ्वी के साथ घुमाता है देखो नं १२

अज्ञा० अज्ञात दोष उसे कहते हैं जो बिना जाने कह देना जैसे कहना कि सूर्य १ साल में १८० फ़ीट सुकड़ जाता है देखो नं ९२

मूल० मूलनष्ट दोष उसे कहते हैं जिस का साधन करै उस का मूल ही नष्ट होजाय जैसे सूर्योदय

के सन्मुख पूर्व कहना सूर्य्य से आगे मूल नष्ट देखो नं० ११

स्वहे० स्वहेतु दोष उसे कहते हैं जो अपने ही मान लिया पदार्थ उस को उदाहरण देकर उस ही को हेतु बनाना जैसे ग्रहन पड़ती वार पृथ्वी पर छाया गोल पड़ती है देखो नं० ५

गणि० गणित दोष उसे कहते हैं जो गणित से ठीक नहो जैसे गोल पृथ्वी साधन में जहाज़ का मस्तूल प्रथम दिखाई देता है देखो नं० १

प्रत्य० प्रत्यक्ष दोष उसे कहते हैं जो नेत्रों द्वार दृष्टि पडे उस के विरुद्ध कहना जैसे पृथ्वी को चलती और सूर्य्य को स्थिर कहना देखो नं० १, ५२

स्वव० स्ववचनघात दोष उसे कहते है जो आप कहै उस ही को आप उलटा कहै जैसे पृथ्वी के गोल साधन में तारों को गोल कहै आगे आप ही तारों को अनेकाकार कहैं देखो नं० ७

असं० असम्भव दोष उसे कहते हैं जो सम्भव नहोय जैसे $\frac{1}{2}$ घन्टे में १०००० मील दौड़ता है देखो नं०५६ उस दौड़ते सूर्य्य की प्रदक्षणा पृथ्वी ३६५$\frac{1}{4}$ दिन में करती है देखो नं० १३

प्रला० प्रलापमात्र दोष उसे कहते हैं जैसे चन्द्रमा पहले अग्निरूप था अब ठण्डा होगया देखो नं० ३७ अथवा उस में ज्वार भाटा होते थे अब भी उस के भीतर होते होंगे ।

पी० ऐल० जौगरफी प्रथम भाग की उन पुस्तकों की

सहनानी (निशानी) जो वादियों की मानी हुई हैं।

सहनानी (निशानी)	नाम पुस्तक	किस सन् में छपी	नाम रचयता	किस जगह छपी
आर्ड०	आर्डन वुड जौगरफी Arden wood Geography.	१९१४ 1914	आर्डन वुड W. H. Arden wood C I E. M. A. F. R. G. S.	लन्दन
मैन्यु०	मैन्यूअल जौ० Manual Geography.	१९१३ 1913	मार्डच John Murdoch L. L. D.	लन्दन
मैट्री०	मैट्रीकुलेशन जौगरफी Matriculation Geography.	१९११ 1911	अभयचरन मुकरजी Abhay charan Mukerji M. A. Professor Muir central college Allahabad.	इलाहाबाद Allahabad

भू० १	भूगोल की पहली किताब The First Book of Geography	१९१० 1910	ऐस० ए० हिल साहब बी० ए०, ऐस० सी० S. A. Hill Saheb B. A., S. C. Professor, Muir Central College Allahabad.	इलाहाबाद Allaha-bad.
भू० २	भूगोल की तीसरी किताब Third Book of Geography.	१९१० 1910	ऐस० ए० हिल बी. ए. ऐस. सी. S. A. Hill B. A. S. C.	इलाहाबाद Allaha-bad.
जन०	जनरल जौगरफी Generel Geography.			
ऐली मैं०	ऐलीमेंट्रीफ़िसाकल जौगरफी Elementary Geography.		ऐम. बी. हिल M. B. Hill.	
साइंस प्रा०	साइंस प्राइमर जौगरफी Science primer Geography.	१९०८ 1908	हिल, आर. ड्युरक Hill R. Durik	

स्टोरी	दी स्टोरीआफ दी हैविंस	१९११	सर रौबर्ट ऐस. बाल	लन्दन न्यूआर्क टोरन्टो मैलबोर्न
	The Story of the Heavens.	1911	Sir Robert S. Ball M. A. L. L. D., F. R. S. F. R. A. S.	London Newyork Toronto Mellbo-urn.
लौंग	लौंगमेन्स जौगरफी	१९१४	लांगमेंन	इंगलैण्ड न्यूआर्क कलकत्ता
	Long Man's Geography	1914	Long man Sahib	Ingland Newyork Calcutta.
ज्योति०	ज्योतिर्विनोद	१९१७	सम्पूर्णानन्द बी. ए. एस. सी. एल. टी.	
	Giottirvinod	1917	Sampurna-nand B. A. S. C. L. T.	Benares

स्टार०	स्टारलेन्ड Star land	१८९० 1890	सररौवर्ट ऐस वाल ऐफ आर ऐस रौयल ऐस्ट्रोनौमर आफ आ- यरलैन्ड Sir Robert S. Ball F. r. s. Royal Astronobr of Ireland.	लन्दन पैरिस मैलवोर्न London Parıs. Melbo- wne.
ऐस्ट्रो०	ऐस्ट्रोनोमीं आफटूडे Astronomy of to-day	१९१० 1910	सैसिल जी डौलमेज ऐम. ए. ऐल ऐल. डी डी. सी. ऐल. Cecil G. Dolmage M. A. L. L. D. D. C. L.	लन्दन London

सारांश वार्त्ता
भूगोल भ्रमण वादियों की

सद्गुनानी दोष	परस्पर विरोधी नम्बर	नम्बर स्वीकृत	सारांश वार्त्ता भूगोल भ्रमण वादियों की	निशानी मान पुस्तक	पृष्ठ पुस्तक
प्रत्य०	५६ १५ २९ ३३ ३४ ६९	१	पृथिवी ध्रुवों की तरफ़ करीब चपटी नारंगी के आकार घूमती हुई है। भावार्थ स्थिर नहीं है।	आर्ड०	१०
गणि०	१५ ७९ २८	२	भू की गुलाई की ऊंचाई की आड़ से जहाज़ का मस्तूल पहले दीख पड़ता है ताते भू गोल है।	सैंट्री०	८
सम०		३	क्षितिज पर सर्व तरफ़ गोल दीख पड़ता है ताते भू गोल है।	आर्ड०	११
गणि०		४	सीधे किसी तरफ़ जाओ वहां ही आजाओगे ताते भू गोल है।	मेन्यू०	३

स्वहे॰	७१	५	ग्रहन में चन्द्रमा पर पृथिवी की छाया गोल पड़ती है ताते भू गोल है	आर्ड॰	११
सम॰	४७ ४९	६	बनिस्वत मैदान के ऊंचे स्थान से पृथिवी का हिस्सा अधिक दीख पड़ता है ताते भू गोल है।	मैंट्री॰	८
स्वव॰		७	तारे सितारे सब गोल दीख पड़ते हैं ताते प्रकृतानुसार पृथिवी भी एक तारा है ताते भू गोल है।	आर्ड॰	१०
सम॰		८	उत्तर दक्षिण में सफ़र करने में नये २ तारे दीखते हैं ताते भू गोल है।	मैंट्री॰	९
सम॰		९	पृथिवी के कुछ भाग में दिन और एक भाग में रात्रि होती है ताते भू गोल है।	मैंट्री॰	९
गणि॰	१४ १९ २६	१०	नहर या रेल की पटरी बिछाने में १ मील में ८ इंच पृथिवी पर ढाल देना पड़ता है ताते भू गोल है।	मैंट्री॰	९
मूल॰		११	सूर्योदय जहां उदय होता है उस के सम्मुख पूर्व पीछे पश्चिम दायें दक्षिण बायें उत्तर होती है।	भू॰ प्र॰	६

मन०		१२	पृथिवी के चारों तरफ वायु मंडल घूमता है। सारांश यह है कि पृथिवी के ऊपर आकाश वर्ती पदार्थों को पृथिवी के साथ घुमाता है।	मैट्री०	६७ व ६८
असं०	२९ ३५ ५६ ५७	१३	भू सूर्य की प्रदक्षिणा में फी सेकिंड १८$\frac{१}{२}$ मील दौड़ती है और ३६५$\frac{१}{४}$ दिन में प्रदक्षिणा करती है।	आई०	६ व ७
गणि०	१० २९	१४	पृथिवी की परिधि २४९०० मील घूमती हैं २४ घंटे में। भावार्थ फी घंटे १०३७ मील। फी मिनिट १७ मील।	मैन्यू०	८
प्रत्य० गणि०	१ २ १८ १९	१५	सब जगह पर समुद्र के जल की सतह बराबर है। भावार्थ:— गोल पृथिवी के ऊपर पानी की सतह बराबर है।	मैट्री०	४७

: '	१८ ३०	१६	पानी सब से नीची सतह की ओर को वहता है ।	वेली- मैं०	६२
स्वच०	२० २१ २२ ५५	१७	पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा गोलाकार नहीं किंतु अंडाकार देती है ।	मैट्री०	१४
स्वव०	१६	१८	हमारा (हिन्दुस्तानियां का) नीचा वह अमेरिकैन का ऊंचा है । अमेरीकैन का नीचा हिंदुस्तानियां का ऊंचा है	मैन्यू०	७
स्वव०	१० १५ ३३ ३४	१९	पृथिवी का व्यास पूर्व पश्चिम ७९२६ मील और उत्तर दक्षिण २६ मील कम यानी ७९०० मील है ।	मैन्यू०	३

स्वव०	१७ २१ ७८ २५ ४० ४१	२०	पदार्थ एक दूसरे को ऐसी शक्ति से परस्पर खींचते हैं कि जितने निकट होते हैं आकर्षण उतनी ही अधिक होती है और दूर होने पर कम हो जाती है।	मैन्यू०	३०
स्वव०	१७ २० २२ ७३	२१	सूर्य की आकर्षण शक्ति पृथिवी को इधर उधर नहीं जाने देती है।	जैलो-मं०	९
स्वव०	१७ २१ ७३ ८०	२२	आकर्षण शक्ति पदार्थों को स्थान पर कायम रखती है।	मैन्यू०	३०
स्वव०	७३ २५	२३	आकर्षण बड़े पत्थर में अधिक और छोटे में कम।	सायं०	४२

स्वर्च०	४८ ७८ ७३	२४	आकर्षण सब जगह एक सी नहीं इङ्गलैन्ड में अधिक और हिंदुस्तान में कम केन्द्र के पास नहीं ।	सायं०	२१
स्वच०	२२ ७८ २० २६	२५	हर एक वस्तु हलकी होय या भारी गिरने में बराबर समय लगता है यदि हवा रहित नली में डाली जाय तो ।	स्टो०	१२३ १२४
स्वच०	७८ ७२ २५	२६	पदार्थ दूर होने पर आकर्षण कम हो जाती है जैसे चन्द्रमा के बराबर दूरी से पदार्थ धीमे उतरता है ।	स्टो०	१२६
स्वच०	७६ ९ २८	२७	पृथिवी की घूम की सतह ६६ $\frac{1}{2}$ डिगरी का कोन बनाती है और उत्तरायन दक्षणायन २२ $\frac{3}{2}$ डिगरी से अधिक नहीं झुकतीं ।	मैग्नू०	९

अंस० स्लच०	९ २ २७	२८	दाक्षिणी उत्तरी पोलों में ६ महीने की रात्रि और ६ महीने का दिन होता है ।	मैन्यू०	१० ११
स्वच०	१ १३ १४	२९	पहले पश्चिमी विद्वान ईसामसीह के जन्म से पीछे १४०० वर्ष तक पृथिवी को स्थिर मानते थे ।	स्टोरी०	८
स्वच०	१६ ३८ ७३	३०	जल सम स्थल पर ठहरता है किंतु ऊंचा नीचा आकर्षण से होता है ।	एली०	६४
अज्ञा०		३१	वायुमंडल सर्व तरफ ५० मील से २०० मील तक ऊंचा है परंतु जिंदगी ५ मील ऊपर नहीं रहती है ।	ऐलीO	२९
स्वच० अज्ञा०	४८ ७८ ७३	३२	वजन पदार्थ में ऊपर ले जाने से घट जाता है और केन्द्र के पास जाने से बहुत बढ़ जाता है	स्टोरी	१२७ १२८

अज्ञा० स्वत्र०	१ १९ १५	२३	हाइलेन्ड की पृथिवी जल से नीची है उस की रक्षा के लिये बंद बंधे हैं।	मैन्यू०	२४५
स्वत्र०	१ १९ ६६	२४	जल बर्फ से नीचे रहता है कारण जल से वर्फ हलकी होती है।	भूगो० २	६७
प्रत्य०	१३	२५	चन्द्रमा पृथिंवी के सर्व तरफ घूमता है जैसे सूर्य के सर्व तरफ पृथिवी घूमती है।	आर्ड०	२५
स्वत्र०	१० ४० ४१	२६	चन्द्रमा की दूरी पृथिवी से २४०००० मील है।	आर्ड०	९
पला०		२७	चन्द्रमा पहिले अग्नि रूप था तब उस में बड़े बड़े ज्वारभाटे होते थे अब ठंडा हो गया है अब भी उस के भीतर होते होंगे।	स्टोरी०	५४९

प्रत्य० अज्ञा०	३०	३८	पृथिवी में ज्वारभाटे चन्द्रमा से होते हैं पहले चन्द्रमा अग्नि रूप था तब उस में बड़े बड़े ज्वारभाटे पृथिवी से होते थे और अब भी होते होंगे।	स्टोरी०	५४८
स्वव० प्रत्य०	५६ ५७	३९	वर्तमान भू० गो भू० वादी सूर्य को केन्द्र में मान कर भू आदि को घूमती मानते हैं मात्रार्थ सूर्य को स्थिर मानते हैं।	स्टोरी०	२० २१ २२
अज्ञा० स्वव०	४१ २०	४०	चन्द्रमा पहले पृथिवी से संलग्न था और चन्द समय में घूम जाता था अब पृथिवी से दूर होगया है और ६५६ घण्टे में घूमता है।	स्टोरी०	५४३
स्वव० अज्ञा०	३६ ४० २०	४१	पृथिवी से चन्द्रमा २३९००० कभी २२१००० कभी २५२००० मील दूरी पर घूमता है।	स्टोरी०	७५
प्रत्य० स्वव०	४१	४२	चन्द्रमा पृथिवी की परिक्रमा २७$\frac{१}{४}$ दिन से कुछ अधिक समय में करता है।	मैन्यू०	१४

प्रत्य०		४३	जो कि जमीन की अपनी कीली पर घूमने की दिशा है वही चन्द्रमा की है भावार्थ चन्द्रमा पश्चिम से पूर्व की ओर घूमता है ।	मैन्यु०	१४
स्वव० प्रत्य०	५६ ५७	४४	तारे स्थिर हैं जैसे सूर्य ध्रुव तारे आदि सितारे चलते घूमते हैं जैसे पृथिवी आदि ।	कैंग०	२
असं०		४५	आंख से ३,००० तारे दीखते हैं और दूरबीन से २ करोड़ से कुछ अधिक दीखते हैं ।	आर्ड०	३
	५८ ५९	४६	बुध शुक्रादि नेपचून पर्यंत ग्रहों की सूर्य से दूरी.	मैन्यु०	४
स्वव०	७	४७	जोडि एक पृथिवी की कक्षा चलने की रेखा से ९ डिगरी इधर उधर है जिस में कि १२ राशि के सितारे हैं ।	मैट्री०	७

स्वव०	२४	४८	आकर्षण से ऊपर नीचे दोनों तरफ पृथिवी से वज़न हलका हो जाता है।	साइंस प्राइमर०	४२
स्वव०	७	४९	कोमिट सितारे भिन्न २ तरह यानी अनेक आकार के होते हैं।	स्टोरी	३३७
स्वहे०	७१	५०	चन्द्रमा को सूर्य व पृथिवी के बीच में आने से सूर्य ग्रहण और पृथिवी की छाया चन्द्रमा पर. पड़ने से चन्द्रग्रहण होता है।	मैंट्री०	२० २२
मज्ञा० प्रश्ना०	७२	५१	सूर्य का व्यास ८६७००० मील है।	मैन्यु०	४
स्वय० अज्ञा०	५६ ५७	५२	सूर्य की तरह और भी तारे स्थिर परवारों के केन्द्र हैं।	मैन्यु०	६

स्वच०	५४	५३	सूर्य एक बड़ी गेंद है ज़मीन से १३000000 गुणी है।	मैल्यू०	४
स्वच० मला०	५२ ५६ ५७	५४	सूर्य सब से छोटा स्थिर तारों में एक तारा है पृथिवी से १५ लाख गुणा और सब नक्षत्रों से मिल कर ५०० गुणा है।	आई०	४
स्वच०	१७	५५	पृथिवी का फ़ासिला सूर्य से ९३000000 मील है।	आई०	४
स्वच० मला०	९ ५२ ५४	५६	सूर्य अपने परिवार सहित आध घण्टे में दस हज़ार मील की चाल से लिरा की तरफ जा रहा है।	स्टो०	४५६ ४५७

स्व० प्रला०	१३ २१ ५२ ५४	५७	सूर्य चक्र परिवार सहित उल्टा लायरा तारे की तरफ १ सिकेन्ड में ११ मील चलती है।	ज्योति०	१३४ १३५
स्व०	४६	५८	सूर्य के परिवार ग्रहों का नक़्शा	ज्योति० स्टोरी०	४९ ५४७
स्व०	५६ ५७	५९	पृथ्वी स्थिर है और उस के गिर्द सूर्य घूमता है जो ऐसा कहते हैं वह मूर्ख और ग्रामीण हैं।	भूगो० प्रथम०	१०८
प्रत्य०	५७	६०	चंद्रमा में रोशनी सूर्य से होती है भावार्थ स्वयं चन्द्रमा प्रकाशमान नहीं है।	थार्ड०	९
अज्ञा०		६१	सूर्य असंख्यात हैं।	स्टोरी	४२२

मन०		६२	सूर्य के धरातल के प्रत्येक वर्ग फिट में इतनी गर्मी निकलती है जितनी कोयले के जलाने से ।	स्टोरी०	५१५
अज्ञा० , मन०		६३	कोई समय ऐसा आयेगा दिन १४०० घंटे का होगा ।	स्टोरी०	५४६ ५४७
अज्ञा०		६४	रोशनी की चाल फी सेकण्ड १८६००० मील है सूर्य की रोशनी पृथ्वी तक ८ मिनट में आती है ।	आर्ड	४
अज्ञा०		६५	(Solar System) सौर चक्र सूर्य से असंख्यात मीलों दूरी पर है ।	ज्योति०	५२

असं०		६६	मङ्गल पृथ्वी के समान है वहां के सुशिक्षित पुरुषों ने नहरें भी निकाली हैं जिन में एक का नाम गंगा है सब से बड़ी नहर १७७० कोस लम्बी है और २० मील तक चौड़ी नहरों की संख्या इस समय ३०० से अधिक है ।	ज्योति०	५५ ५७ ५८ ६९
असं०	६०	६७	चन्द्रमा का एक ही भाग आज कल दीखता है ।	स्टोरी०	५४७
मन०		६८	चन्द्रमा का व्यास २१६० मील है और पृथ्वी से पिण्ड में $\frac{१}{५०}$ वाँ और तोल में $\frac{१}{८०}$ वाँ क्षेत्रफल में $\frac{१}{१३}$ वां भाग है ।	स्टोरी०	७४

स्वच०	१	६९	दूरबीन के मकान की छत में खिड़की के द्वारा दूरबीन नेत्र की पुतली क्रमश तीनों स्थिर होने पर ही तारे सितारे दीख पड़ते हैं ।	स्टोरी०	१२ १३
असं०	२३	७०	पृथ्वी की दूसरी ओर में ज्वार भाटा चन्द्रमा पृथ्वी को खींचता है जब होता है ।	स्टोरी०	५३७
	५०	७१	रकाबी की छाया पृथ्वी पर बराबर सूर्य की तरफ कम अन्त में नष्ट हो जाती है ।	स्टोरी०	२८
अज्ञा० प्रला०	५१	७२	सूर्य एक साल में १८० फुट सुकड़ता जाता है और अन्त में सुकड़न बन्द होकर ठण्डा हो जायगा ।	ऐस्ट्रो०	१२८ १२९

स्वव०	२१ २२ २३ २४ २६	७३	चन्द्रमा और बुध की चाल से आकर्षण की असम्भवता ।	एस्ट्रू०	४४ ४५
गणि० स्वव०		७४	कलकत्ते के समुद्र की सतह से पृथिवी की दूरी तथा ऊंचाई का ब्यौरा ।	रेलवे टेम टेबिल	
प्रला०		७५	पृथिवी पर घड़ी के द्वारा टाइम दिखाने का नकशा ।	रेलवे टेम टेबिल	
गणि० स्वव०	२७ ७७ ९	७६	किसी नदी का फाट बिना उस के पार गये निकालना गणित से ।	मैन्सू- रेशन	२५

गणि० स्वव०	७६	७७	एक वृत्त के बाहरी विन्दु की दूरी केन्द्र तक और अर्ध व्यास मालूम है तो सम्पात रेखा बताना।	मैंमसु- रेशन	३.२
स्वव० प्रला०	२० २४ २२ २५	७८	पदार्थ केन्द्र के पास ज्यों ज्यों जाता है हलका होता जाता है भावार्थ केन्द्र के पास वजन नहीं रहता है।	ऐली- मैं०	४२
गणि०	२ ७६	७९	गोलाकार पिण्ड पर दृष्टि से दूरी देखने की रीति।	मैन्सु- रेशन	२५
स्वव०	२९	८०	कुछ तारे ऐसे हैं जो वायु मण्डल में आकर क्षय हो जाते हैं और पृथिवी पर भी गिर पड़ते हैं।	मैन्यु०	५

बहुमत सम्मति से

पृथ्वी स्थिर और सूर्य्य भ्रमण ।

प्रिय पाठको ! यदि देखा जाय तो इस देश में ही क्या अन्यान्य देशों में नवीन सभ्यता स्वतंत्रता तथा नवीन आविष्कारों के द्वारा अनेक नवीन सिद्धान्त प्रचलित हो रहे हैं और प्रति दिन अधिकाधिक होते ही जाते हैं और उन में ऐसे भी सिद्धान्त हैं कि जो समस्त संसार के प्राचीन सिद्धान्तों के प्रतिकूल हैं जिस में अति प्रसिद्ध भू भ्रमण सिद्धान्त एक ऐसा विलक्षण सिद्ध हुआ है कि जिस को केवल आधुनिक मतावलम्बियों ने कहा है किन्तु हमारे देश के अनेक विद्वानाभास भी बड़ी प्रसन्नता से उसे अपने पूज्य महर्षियों का मत विवेक पूर्वक न देख उसे ऋषियों का कहा हुआ सिद्ध करते हैं और भी आधुनिक पुष्ट करने को सन्नद्ध हैं। ऐसी अवस्था में सत्य सिद्धान्त के पाक्षिक विद्वान अपने प्रतिकूल असंख्य विद्वानों का नवीन बल दल देख कर अपने पैर पीछे को न हटाते यही कहरहे हैं कि पृथ्वी अचला है। सत्यता के मार्ग से चलित होना धीरों का

काम नहीं है। सत्य की सदा विजय है। असत्य की नहीं॥ हमारे भारतवर्ष में कुछ समय से भूगोल भ्रमण का कोलाहल होना प्रारम्भ हुआ है और हो रहा है।

यद्यपि प्रतिष्ठित पदवीधारी विद्वानों के अंतःकरण में भी भू भ्रमण सिद्धान्त ने नहीं स्थान पाया तथापि वे महाशय अपनी प्रतिष्ठा, और पद्वी की लज्जा करके सूर्य परिभ्रमण सिद्धान्त के विषय में लेखनी उठाना अनुचित समझते हैं इसका परिणाम यह हो रहा है कि जैसे विदेशियों ने भूभ्रमण सिद्धान्त निकाला है वही हमारे ज्योतिषादि पुरातन शास्त्र से भी सिद्ध होता है यदि ऐसा न मानेंगे तो दिन रात्रि का होना, ऋतुओं का बदलना, ग्रहण का पडना वायु का इस प्रकार चलना सिद्ध ही नहीं हो सकता। और यदि किसी विद्वान से सुना कि सूर्यही चलता है पृथ्वी अचला है तो उस को मूर्ख समझ कर हंसने लगते हैं क्यों कि उन के अंतःकरण में तो और ही मत समाया है और यह भी वे पढ चुके हैं कि कुपढ लोग यह समझते हैं कि सूर्य चलता है पृथ्वी ठहरी है। किन्तु इस में उन बिचारों का दोष ही क्या है उन के माता पिता बाल्यावस्था से ही दासता की अभिलाषा से प्राइमरी आदि स्कूलों में पढने को भेज देते हैं और वहां उन के मास्टर प्रथम ही से

भूमि का चलना सूर्य का नाभि होना और न्यूटन के आकर्षण सिद्धांतों को पढ़ा कर ठीक कर देते हैं ।

और यहां से निकल कर यदि आर्य समाजियों के मार्ग में पड़ गये तो फिर क्या स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रभृति महात्माओं के वेद में पृथ्वी का भ्रमण वर्णन वेद में पृथ्वी की गति इत्यादि शीर्षक लेखों को देख कर अपने पढ़े सिद्धान्त को और भी पुष्टतर मान बैठते हैं किन्तु अधिक अभिलाषा बढ़ने पर अपने ज्योतिष सिद्धान्तों की ओर यदि ध्यान दिया तो आर्यभट्ट का नाम लेकर प्राचीन आचार्यों का भू भ्रमण मत वर्णन करने वाले बडे पंडित मन्ये और बाबुओं की बनाई सिद्धान्त शिरोमणि, गोलाध्याय सूर्य सिद्धान्तकों की टीका और भू भ्रमण प्रतिपादक उन के लेखों को देखा जिस से उन को यथार्थ आशय के ज्ञान न होने पर भी यह दृढ़ हो जाता है कि जैसा आधुनिक विज्ञानियों ने विज्ञान से और स्वामी दयानंद प्रभृति वेद के व्याख्याकारों ने वैदिक प्रमाणों से भू भ्रमण सिद्धान्त ही यथार्थ माने हैं उसी प्रकार हमारे समस्त ज्योतिष आचार्योंने भी अपने सिद्धान्तों में भी स्पष्ट भू भ्रमण का प्रतिपादन किया है, सो उन का भ्रम है ।

इस बात के दृढ़ करने को कि भू अचल है और सूर्य भ्रमण करता है कुछ पुरातन विद्वानों के अपने मतों से दृढ़ कराते हैं यद्यपि हमारे समस्त आर्ष सिद्धान्तों में तथा अन्यान्य सद्विद्वानों के सिद्धान्तों में भू भ्रमण का मण्डन कहीं न पाये जाने से यह विषय तो निर्णीत ही था तथापि कतिपय आधुनिक विद्वानों के तथा दुराग्रहियों के यह चिल्लाने से कि जो सिद्धान्त विदेशीय विद्वानों ने कुछेक शताब्दियों से जाने हैं वे सिद्धान्त हमारे समस्त ज्योतिःशास्त्र के मूल ग्रन्थकारों ने प्रथम ही से लिख रखे हैं और यह देख कर कि उन लोगों ने इस मिथ्यात कलरव से भारतवर्ष ही नहीं प्रत्युत अनेक देश के बेचारे सर्व सामान्य मनुष्यों को (जो लोग हमारी संस्कृत विद्या न पढ़ कर केवल उन्हीं लोगों के व्याख्या किये हुए ग्रन्थों को देख कर जानना चाहते हैं) भ्रम में डाल दिया है तातै विद्वानों का निकाला भू भ्रमण का भ्रम हमारे प्राचीन आचार्यों तथा महर्षियों के माथे पर कलंक के टीका के सदृश मढ़ना पड़ा है।

अतएव अत्यंत आवश्यक जान कर ज्योतिःशास्त्र के न जानने वाले उन सर्व सामान्य मनुष्यों के अन्तःकरण के समाये भये इस मिथ्या भू भ्रमण सिद्धान्त को निकाल कर यथार्थ सूर्य भ्रमण का

सिद्धान्त दृढ़ कर ग्रन्थ चुम्बक सिद्धान्ताभिमानियों के मद दूर करने के अभिप्राय से ज्योतिषी विद्वान ज्योतिःशास्त्र के गणितों से अपने महर्षियों की श्रेष्ठ मति द्वारा यथार्थ पृथ्वी अचला का निरूपण करते हैं।

* वेदों की साक्षी *

यजुर्वेद ३२ वां अध्याय मंत्र ६

येनद्यौरुग्रा पृथ्वी च दृढ़ायेनस्वः स्तभितं येन नाकः
यो अन्तरिक्षेरजसोविमानः कस्मैदेवायहविषाविधेम॥

३२—६ इस मंत्र में पृथ्वी को दृढ़ विशेषण दिया है कि पृथ्वी दृढ़ है स्थिर है।

यजुर्वेद ३२ वां अध्याय मंत्र ७

यन्क्रान्दसी अवसातस्तभोन अभ्यैक्षेता मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितोविभाति कस्मै देवाय हविषाविधेम आपोहयद्बृहतीर्यश्चि दायः

३२—७ इस में सूर्य को चलायमान, रेजमाने, (चलता हुआ) विशेषण लिखा है।

यजुर्वेद ३३ वां अध्याय मंत्र ४३

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो विशेषयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सवितारथेना देवोयाति भुवनानिपश्यन्॥

३३—४३ सविता नाम सूर्य सोने के से रथ कर के तिस तिस देश में आवर्तमान कहिये चलता हुआ देवता और मनुष्यों को अपने अपने व्यापार में लगाता हुआ रात्रि के साथ सबभुवनों को देखता हुआ गमन करता है (इस मंत्र में सूर्य को आवर्त-मान भ्रमण करता हुआ लिखा है]।

यजुर्वेद ३३ वां अध्याय मंत्र ४४

प्रवावृजे सुपृया वर्हिरेषामाविश्वतीव वीरिटं इयाते।
विशामक्तोरुषसःपूर्वहूतौवायुःपूषास्वस्तये नियुत्वान्

३३—४४ इस मंत्र में वायु को और पूषा (सूर्य) को सुन्दर प्रकार चलता शीघ्र वेग से लिखा है।

वेदानुयायी विद्वानों का कथन

इस मत में पृथ्वी का सर्वतोभाव से स्थिरत्व तथा सूर्य गृहगणों का अपने आप मण्डल प्रति मण्डलादिकों में पूर्वाभिमुख पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण करना तथा उनके उपरिस्थ पंजरों के सहित प्रवह वायु द्वारा २४ घंटे में एक बार पश्चिमाभिमुख भ्रमण करना वर्णित है यथाः—

श्री सूर्य सिद्धान्त अ० १२

ब्रह्माण्ड मध्येपरिधिर्व्योम कक्षाभिधीयते ।
तन्मध्ये भ्रमणंभानाम धोधः क्रमशस्तथा ॥ ३० ॥
मन्दामरेज्य भूपुत्र सूर्य शुक्रेन्दु जेन्दवः ।
परिभ्रमन्त्यधोऽधस्थाः सिद्ध विद्याधराघनाः ॥३१॥
मध्ये समन्तादण्डस्य भूगोलो व्योम्नितिष्ठति ।
विभ्राणःपरमां शक्तिं ब्रह्मणोधारणात्मिकाम् ॥ ३२ ॥

अर्थात् ब्रह्माण्ड के मध्य में जो परिधि है उसे आकाश कक्षा कहते हैं उस के मध्य में नक्षत्र मंडल का भ्रमण होता है उस के नीचे यथाक्रम

"शनि, जीव, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र,, एक से नीचे एक भ्रमण (अपनी अपनी मध्यकक्षा में) करते हैं उस के नीचे "सिद्ध विद्याधरमेघ,, हैं और चारों ओर से बीचों बीच ब्रह्माण्ड के मध्य (केन्द्र में) परब्रह्मपरमेश्वर की धारणात्मिका शक्ति को धारण करते आकाश में भूगोल सर्वतो भाव से स्थित है।

तथा च वशिष्ठ सिद्धान्त अ० १-५-७

समन्ताद्‌ण्ड मध्ये भूगोलो व्योम्नि निराश्रयः ॥५-३॥
सदा भचक्र भ्रमण नाक्षत्रं दिनमुच्यते ॥१-१५॥
प्रवहः पश्चिमो वायुर्व्योम कक्षाण्य मध्यगा।
तदधोधः शनिर्जीव भौमार्क भृगु चंद्रजाः ॥७८॥
इंदुः समंपूर्व गत्याभ्र मंतिस्व स्वमार्गगाः ॥७-१०

उपर्युक्त वशिष्ठ सिद्धांत के पद्यों का भी अर्थ पूर्वोक्त "श्री सूर्य सिद्धांत" के पद्यों के अर्थ के समान ही है अथः पुनरुक्ति नहीं की गई और इसी प्रकार प्रत्येक आर्ष सिद्धांतों में ग्रहादिकों का भ्रमण वर्णित है और अन्यान्य समस्त आचार्यों का भी यही मत है। उदाहरणार्थ कुछेक आचार्यों के वचन लिखे जाते हैं।

यथा पंचसि० १३ अ० ३९ श्लोक

'चंद्राद्रूर्ध्वंबुधसितरवि कुज जीवार्क जास्ततोभानि।
प्राग्गतयस्तुल्य जवाग्रहास्तु सर्वेस्वमण्डल गाः ॥३९॥

अर्थात —चंद्र से ऊपर क्रम से बुध शुक्र सूर्य मङ्गल जीव शनि हैं तिन के ऊपर नक्षत्र मण्डल हैं; और सर्व ग्रह अपने अपने मण्डल में पूर्वाभिमुख समान गति से गमन करने वाले हैं।

तथा लल्लाचार्यकृत शि० वृ० मध्या धिकारी श्लोक १२।

चंद्रज्ञभार्गवदिनेश कुजार्य सौरिभानिक्षितेः।
क्रमत ऊर्ध्वगति स्थितानि। लङ्का नगर्य्यु परितः
प्रगुणानितानि देशेपुति र्यगितरेषु परिभ्रमयंति ॥१२॥

तत्रैव शि०वृ० गोलाध्याय गृहभ्रम-संस्थाध्याय श्लोक ३

सदैवनित्य प्रवहेणवायुनानि रक्षदेशो परिगोभपंजरः
स्वपश्चिमा शाभि मुखो पिनीपते सुरासुराणा मय
संव्यसव्यगाः ॥३॥

तथा च आर्यभटीय सि० काल क्रियापाद श्लोक १५–१७

भानामधः शनैश्चरसुरगुरु भौमार्क शुक्र बुधचंद्राः।
पेषामधश्च भूमिर्मेधीभूताख मध्यस्था ॥१५॥
कक्षा प्रति मण्डलगा भ्रमंति सर्वे ग्रहाः स्वचारेण
मंदोच्चादनुलोमं प्रतिलोमञ्चैवशीघ्रोच्चात् ॥१७॥

तथा च सिद्धा० शि० गोलाध्याय

भुवनकोष श्लोक २

भूमेः पिण्डः शशाङ्कज्ञकविरवि कुजेज्यार्कि नक्षत्र कक्षा। वृत्तैर्वृतो वृतः संमृद् निलसलिल व्योमतेजो मयोयम्। नान्याधारः स्वशक्त्यैव वियति नियतं तिष्ठती हास्यपृष्ठे निष्ठंविश्वञ्च शश्वत्सदनुजम नुजादित्य दैत्यं समंतात् ॥२॥

तत्रैवसि० शि० गो० मध्यम श्लोक०

२-३

भूमेर्बहिर्द्वादश योजनानि भूवायुरत्राम्बू दविद्यु दाद्यम्। तदूर्ध्वगोयः प्रवहः सनित्यं प्रत्यग्गतिस्त-स्यतुमध्यसंस्था ॥ २ ॥ नक्षत्र कक्षा खचरैः समेतो यस्माद्गतस्तेन समाहतोयम्। भपञ्जरः खेचरचक्र युक्तो भ्रमत्यजस्रं प्रवहानिलेन ॥ ३ ॥

वराहमिहरः पं०सि०अ०१३ श्लोक६-७

भ्रमति भ्रमस्थितेव क्षिति रित्यपरे वदन्तिनोडुगणः।
यद्येवंश्येनाद्या नखात्पुनः स्वनिलय मुपेयुः ॥ ६ ॥
अन्यच्चभवेद्भू मेरहा भ्रमरहंसाध्यजादीनाम् ।
नित्यं पश्चात्प्रेरणमथात्प गास्यात्कथं भ्रमति ॥ ७ ॥

तथा च शि० वृ० गो० मिथ्या ० श्लोक० ४२–४३

यदि चभ्रमति क्षमातदास्वकुलायं कथमाप्नुयुः खगाः इषवोभिनभः समुज्भिताः निपतन्तः स्युरपाम्पतेर्दिश ॥ ४२ ॥

पूर्वाभिमुखे भ्रमेभुवो वरुणाशाभिमुखो ब्रजेदु घनः । अथ मन्द गमात्तदाभवेत्कथ मेकेन दिवापरिभ्रमः ॥ ४३ ॥

उपर्युक्त पद्यों का आशय यही है कि यदि पृथ्वी भ्रमण करती होती तो जो पक्षी गण उड़ते हैं वे अपने घोंसलों तक न पहुंचते क्योंकि वह पृथ्वी के बाहर हैं तो पृथ्वी की गति से उन से कुछ सम्बंध नहीं है और पताका पश्चिम की ओर उड़ती दिखलाई देती क्योंकि पूर्व को पृथ्वी भ्रमण होने से उस के पश्चिम को वायु जायगी और जो वाण आकाश में फेंके जाते हैं वे पश्चिम को जाते दिखलाई देते । किन्तु पृथ्वी की मन्द गति के मानने से एक दिन में उस का परिभ्रमण कैसे हो सकता । अतएव पृथ्वी नहीं भ्रमण करती ।

वाचस्पत्यबृहदभिधानस्य पत्र संख्या ४६८४

इंगलेंडीय ज्योतिर्विदामते भूगोलस्येवदक्षणोत्तर गतिभ्यासूर्यस्य उत्तर । दक्षिण गतित्वंकल्पते स्थिर-स्यसूर्यस्य उत्तर दक्षिणायनयोरसंभवात्

भर्तृशतक कर्मवादी

ब्रह्मायेनकुलालवन्नियमितोब्रह्माण्ड भाण्डोदरे
विष्णुर्येनदशावतार गहनेक्षिप्तो महासङ्कटे
रुद्रोयेनकपालपाणि पुटके भिक्षाटनंकारितः
सूर्योभ्राम्यति नित्यमेवगगने तस्मैनमःकर्मणे

इस में गगण में सूर्य नित्य ही गमन करता बताया है ।

भविष्यतपुराण आदित्यहृदयस्तोत्र

श्लोक—योजनानामसहस्त्रे द्वे शतेद्वे चयोजने
एकेननिमिषार्धेनभ्रममाणनमोस्तुते

अर्थ—दो हजार दो सौ दो एक निमिष के अर्ध में चलने वाले सूर्य को नमस्कार ।

(इस में सूर्य को चलता बताया है) ।

सूर्य सिद्धान्त आदि आर्षग्रन्थों में भी स्व-शक्ति से ही भूमि का ठहरना माना है जैसा

मध्येसमन्तादण्डस्य भूगोलोव्योम्नितिष्ठति ।
बिभ्राणः परमांशक्तिं ब्रह्मणोधारणात्मिकाम् ॥४॥
इदानींकथमियंभूमेः स्वशक्तिरित्याशंकांपरिहरन्नाह ।

यथोष्णतार्कानलयोश्चशीतता
विधौ द्रुतिः के कठिनत्वमश्मनि ।
मरुच्चलो भूरचला स्वभावतो ।
यतोविचित्रावत वस्तु शक्तयः ॥५॥

जैसे सूर्य और अग्नि में उष्णता; चंद्रमा शीतलता, जल में द्रवत्व (बहना,) पाषाणमें कठोरता वायु में चंचलता, वैसे ही पृथिवी में स्थिरत्व स्वभाव से ही है इन कारणों से ज्ञात होता है कि वस्तु की शक्तियां विचित्र हैं। इस से पृथिवी में जो ठहरने की शक्ति है वह भी स्वभाव ही से है।

भास्कराचार्य सिद्धान्त शिरोमणि में लिखते हैं।

इदानींद्वीपानांसमुद्राणांचस्थानमाह-
भूमेरर्द्धं क्षारसिंधोरुदक्स्थं
जम्बूद्वीपं प्राहुराचार्यवर्याः।
अर्धेऽन्यस्मिन् द्वीपषट्कस्य याम्ये
क्षार क्षीराद्यम्बुधीनां निवेशः॥ २१
लवणजलधिरादौदुग्धसिंधुश्च तस्मा-
दमृतममृतरश्मिः श्रीश्चयस्माद् बभूव।
महित चरण पद्मः पद्मजन्मादिदेवै—
र्वसति सकलवासो वासुदेवश्च यत्र॥
दध्नो घृतस्येक्षुरसस्य तस्मा—
न्मद्यस्य च स्वाहुजलस्य चांत्यः।
स्वादूदकांतर्वड़वानलोऽसौ—
पाताललोकाःपृथिवीपुटानि॥२२
चंचत्फणामणिगणांशुकृत प्रकाशा-
स्तेषु सासुरगणाः फणिनोवसंति।

दीव्यन्ति दिव्यरमणी रमणीयदेहैः
सिद्धाश्च तत्र च लसत्कनकावभासैः ॥२४॥
शाकंततः शाल्मल मत्र कौशं
कौञ्चं चगोमेदक पुष्करेच ।
द्वयोर्द्वयोरन्तरमेकमेकं
समुद्रयोर्द्वीपमुदाहरन्ति ॥२५॥
इदानींजम्बूद्वीपमध्ये गिरिनिवेषवशेन नव खंडान्याह—
लङ्कादेशाद्धिमगिरिरुदग्धेमकूटोऽथ तस्मा—
त्तस्माच्चान्येनिषध इतितेसिंधु पर्यंत दैर्घ्याः ।
एवंसिद्धादुदगपि पुराच्छृङ्गवच्छुक्लनीला
वर्षाण्येषां जगुरिहबुधा श्रंतरेद्रोणिदेशान् २६॥
भारतवर्षमिदं ह्युदगस्मात्
किन्नरवर्षमतो हरिवर्षम् ।
सिद्धपुराच्च तथा कुरुतस्माद
विद्धिहिरण्मय रम्यकवर्षं ॥२७॥
माल्यवांश्चयमकोटि पत्तना—
द्रोमकाच्च किल गन्धमादनः ।
नीलशैल निषधावधी चता
वन्तरालमनयोरिलावृतम् ॥२८॥
माल्यवज्जलधि मध्यवर्तियत्
तत्तुभद्र तुरतं जगुर्बुधाः ।
गंध शैलजलराशि मध्यगं
केतुमाल कमिला कल।विदः ॥२९॥

निषधनील सुगंध सुमाल्यकै-
रलमिलावृत मावृत मावभौ ।
भ्रमरकेलि कुलायसमाकुलं
रुचिरकाञ्चन चित्र महीतलम् ॥ ३० ॥

इदानीं मेरु संस्थानमाह—

इह हि मेरुगिरिः किलमध्यगः
कनक रत्नमयस्त्रिदशालयः ।
द्रुहिणजन्म कुपद्मजकर्णिके
ति च पुराण विदोऽसुमवर्णयन् ॥ ३१ ॥

विष्कम्भशैलाः खलुमन्दरोऽस्य ।
सुगंधशैला विपलः सुपार्श्वः ।
तेषु क्रमात्सन्ति च केतुवृक्षाः
कदम्बजम्बूवट पिप्पलाख्याः ॥ ३२ ॥

जम्बूफलामलगलद्रसतः प्रवृत्ता
जम्बूनदी रसयुता मृदभूत्सुवर्णम् ।
जाम्बूनदं हि तदतः सुरसिद्धसङ्घाः
श्रत्वलिपवन्त्यमृतपानपराङ्मुखास्तम् ॥ ३३ ॥

वनंतयाचैत्ररथंविचित्रं
तेष्वप्सरोनन्दननन्दनंच ।
धृत्याह्वयंयद्धृतिकृत्सुराणां
भ्राजिष्णुवैभ्राज मिति प्रसिद्धम् ॥ ३४ ॥

सारांस्यथैतेष्वरुणांचमानसं
महाह्रदंश्वेतजलं यथा क्रमम् ।
सरः सुराम।रमण भ्रमालसाः

सुरारमन्ते सलकेलिलालसाः ॥ ३५ ॥

उपर्युक्त आर्यभट्ट लल्लभास्कराचार्य विशिष्ठादि के बचनों के अर्थ भी पूर्वोक्त वराहमिहर के बचनों के अर्थ के सदृश उक्त मत के ही पुष्ट कारक हैं और इसी प्रकार अन्यान्य समस्त भारतवर्षीय आचार्यों के सिद्धान्त, तंत्र तथा करेण ग्रंथों के प्रमाण विद्यमान हैं जो विस्तार भय से यहां पर नहीं लिखे गये किन्तु जब सूर्यादि ग्रह गणों को पूर्वाभिमुख गमन सिद्ध है तो पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर भ्रमण करना मिथ्या है और जब भपञ्जरों के सहित ग्रह गणों का प्रवह वायु के द्वारा पश्चिमाभिमुख भ्रमण २४ घंटे में एक बार सिद्ध है तो पृथ्वी का अपने अक्ष पर भ्रमण करना भी मिथ्या है किन्तु उक्त प्रमाणों से यह अच्छे प्रकार से सिद्ध हो गया कि यही हमारे समस्त ज्योतिषाचार्यों का सनातन धर्म यथार्थ है इसी पूर्वोक्त कथन के पुष्ट करने को ज्योतिषाचार्यों ने सूर्य चन्द्रग्रह नक्षत्रादि भ्रमण और पृथ्वी अचला दिखाने को चित्र भी दिखाये हैं ।

मुसलमानों के मत से भी

पृथ्वी स्थिर समस्थल है

देखो कुरानशरीफ

सफा ५८० सीपारा अम्मेयता साबून (तीसवां) अख़ीरी

(अर्बी का तर्जुमा नागरी में)

सूरत तारक़।

वस्समाये ज़ातिर रज़ये। वलअरदे ज़ातिस्सदये। क़सम है आसमान चक्कर खाने वाले की और ज़मीन दराड खाने वाले की।

सूरत गासिया।

अफ़लायनज़रूना, इलैलऐबेलेकैफ़ा खुलैक़त। वऐलस्समाये कैफ़ा ऐफैयेत। वएललजेबाले, कैफ़ा-नौसेवत। वएललअरदे, कैफ़ा सोतेहत।

भला क्या नहीं निगाह करते ऊंटों पर कैसे बनाये हैं और आसमान पर कैसा बुलन्द किया है। और पहाड़ों पर कैसे खडे किये हैं और ज़मीन पर कैसी सफ बिछाई है।

इस लेख में भी पृथ्वी को बिछी हुई समस्थल स्थिर दिखाई है।

ईसाइयों का भी यही मत है।

देखो बाईबिल आदि उनकी रची पुस्तक

पृथ्वी स्थिर और सूर्य चलता है इनका इस पर इतना विश्वास था कि इन के राज्य में पृथ्वी को घूमती सूर्य को स्थिर बताने वाले टाइखो, गैलिलिओ डि० गैरि लाओई (Galileo de Galilei.) को पूरा पूरा दण्ड मिल चुका है देखो ज्योति० पत्र १७८ से १८१

और वैशेषिक नैयायिक सांख्य पातंजलि आदि का तथा पौराणिक जो अठारह पुराणों को मानते हैं उन का यह कथन पुराणों में ठौर २ है कि पृथ्वी स्थिर है और ज्योतिष चक्र चलता है ग्रन्थ के बढ़ने के भय से यहां नहीं लिखा है।

प्रायः मतों की व्यवस्था देखने से मालूम होता है कि पृथ्वी स्थिर है और अनुभव में भी यही आता है कि पृथ्वी स्थिर है ज्योतिष चक्र घूमता है परंतु अब वर्तमान समय में इस को न मान कर बहुधा मनुष्यों का यही ख्याल है कि पृथ्वी घूमती है और ज्योतिष चक्र स्थिर है इस का प्रचार अधिक कैसे हुआ? इस का प्रचार अधिक होने का कारण यही देखा जाता है कि सर्वत्र स्कूलों में बालक ही अवस्था से उस को यही पढ़ाया जाता है कि पृथ्वी घूमती है ज्योतिष चक्र स्थिर है इस कारण बाल-

अवस्था का अभ्यास उस के हृदस्थ हो कर उस ही की वासना उस के अन्तरङ्ग पैठ जाती है जैसे नवीन घट कोरे में हींग भरने से उस की गन्ध पैठ जाती है। यह तो जाना परन्तु विद्यालयों में इस विद्या का प्रचार कैसे हुआ इस में यही कारण है कि जिस समय विद्यालय स्थापित हुए उस समय भूगोल भ्रमण वादियों का प्रवेश (अधिकार) राज्य में अधिक था उन की सम्मति से मिडिल एंट्रेंस बी० ए० आदि डिगिरियों में इस विद्या का प्रचार किया गया है।

प्रचार तो किया परन्तु इस को मास्टरों ने क्यों समझ कर न पढ़ाया-या विद्यार्थियों ने बिना समझे क्यों पढ़ लिया—मास्टरों ने तो आजीविका के वस जैसा पढ़ा वैसे पढ़ा दिया और बालकों को ऐसी बुद्धि बालापन में नहीं होती जिस से उस पर शङ्का करे। किसी बालक ने शङ्का भी करी तो— सुनिये-मास्टर ने पढ़ाया कि पृथ्वी घूमती है और सूर्य की प्रदक्षणा में दौड़ती भी है विद्यार्थी ने पूंछा घूमती हुई सूर्य की प्रदक्षणा में दौड़ती कैसे है— मास्टर ने उस को खेल का उदाहरण देकर समझा दिया कि जैसे लट्टू घूमता हुआ चक्कर भी लेता है बस फिर क्या था बालक के हृदय में समा गई कि ठीक है दूसरा बालक कुछ चतुर था कहने लगा घूमती हुई पृथ्वी प्रदक्षणा दे तो सकैगी परन्तु उसकी

रफ़्तार (चाल) अत्यन्त बेग वाली हो जायगी ऐसे बेग से चलने वाली पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर ग्रहण दो चार घंटे न कर सकेगी जो तुमने ग्रहण का पढ़ना एन्ट्रेंस की डिगरी वाले अमुक विद्यार्थी को पढ़ाया है। मास्टर इस बात को सुन कर उत्तर न देकर कहने लगा तुम को ऐसी उखाड़ पछाड़ नहीं करनी चाहिये यदि हम पढ़ाते हैं इस से कुछ विपरीत परीक्षा समय परचे में लिख दोगे तो डिगरी में पास न होगे फेल हो जावोगे अब विद्यार्थी ने यह बात सुन कर कुछ न कहा और भी विद्यार्थी सुन रहे थे वह विचारे जब संशय कुछ होता था उन को प्रश्न करने का भय होगया इस कारण विद्यार्थियों में इस के पढ़ने का प्रचार बढ़ गया।

दूसरे इस के प्रचार बढ़ने का प्रबल कारण यह है कि राजकीय पाठशालाओं (स्कूलों) में इस का सम्बन्ध होने से जिन जिन देशों में राज्य तिन तिन देशों में पाठशालाओं के पाठ को एक ही गुंजार तिसी की गूंज से दिशा गूंज उठी।

तीसरा सब से प्रबल कारणयह है कि नास्तिक मत जो संसार में प्राणियों के प्रायः बिना शिक्षा दिये ही हृदयस्थ हो रहा है इसी से इस का नाम दूसरा लोकायत सार्थक है इस का ऐसा आशय है यथा:—

श्लोक

अत्र चत्वारि भूतानि भूमि वार्य्यनलानिलाः ।
चतुर्भ्यः खलु भूतेभ्य श्चैतन्यमुपजायते ॥
किण्वादिभ्यः समेतेभ्यो द्रव्येभ्योमदशक्तिवत् ।
अहं स्थूलः कृशोऽस्मीति सामानाधिकरण्यतः ॥
यावजजीवं सुखंजीवे ऋणंकृत्वा घृतंपिवेत् ।
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥
त्याज्यं सुखं विषय सङ्गम जन्म पुंसां ।
दुखोपसृष्ट मिति मूर्ख विचारणैषा ॥
व्रीहीन् जिहासति सितोत्तमतण्डुलाढ्यान् ।
को नाम भोस्तुषकणो पहतान् हितार्थी ॥
यावज्जीवेत्सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः ।
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥
नस्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः ।
नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः ॥

भावार्थ

यहां चार ही पदार्थ हैं पृथ्वी जल अग्नि वायु कोई पांचवां जीव पदार्थ नहीं है यह चारों ही मिल कर जीव बन जाता है जैसे बबूल की छाल गुड़ आदि मिलने से मद्य बन जाता है।

इसी कारण देह में ही समानाधिकरण बुद्धि करी जाती है कि मैं स्थूल हूं मैं कृश हूं जब जीव नहीं है तब जब तक जीवना तब तक सुख से जीवना ऋण कर के भी घृत को पीवना ठीक है।

ऐसा नास्तिक वादि आत्मघाती शिथिल विषय का लंपटी कहता है जो विषय सुख को दुख कारक मान विषयों का त्याग करना यह विचार मूर्खों का है ऐसा है जैसा सफेद चामल वाले धानि को छोड़ हित के अर्थ तुष को ग्रहण करणा व्यर्थ है।

इस हेतु से जब तक जीवना तब तक सुख से जीवना भस्मी भूत देह रूपी आत्मा के फिर आगमन कैसे होय। भावार्थ देह यही आत्मा इस केभस्म होने के पश्चात् देह का मिलना कहां।

न कोई देहसे भिन्न जीव है। न कोई परलोक है न वर्णाश्रम है न कोई क्रिया फल के दैने वाली है बस इसी नास्तिक मत की बासना से इस का पुष्ट कारक जा आकाश के मध्य पृथ्वी का घूमना जिस से उस पृथ्वी के कोई ऊपर न नीचे तथ आस्तिकों ने माने नीचे नरक ऊपर स्वर्ग मोक्ष उन के कारण कोई परणाम क्रिया है। सो ये कुछ भी नहीं ऐसी चिरकालीन वासना के बसते पृथ्वी आकाश के मध्य घूमती हुई का पक्षपात बढ़ गया इस से अनेक देशवासी इसी गीत की तान को तानारीरी चरने लग गये।

परन्तु ऐसे असत्वाद के बढ़ने से क्या आस्तिक जीव के अस्तित्व को मानने वाले श्रेष्ठ अश्रेष्ठ कर्म के विचार वान शुभ अशुभ शुद्ध क्रिया तथा उस के फल नरक स्वर्ग मोक्ष को मानते हुये उत्तम पुरुष धीर्य-

वान् व्रत, जप, तप, संयमादि कर अपने कल्याण के साधने वाले सत्यवाद से मुख मोड़ते हैं ? कदापि नहीं । प्रत्युत कटिबद्ध होकर आगे को ही पदारोपण करते हैं । भावार्थ पृथ्वी को स्थिर मान उस के ऊपर स्वर्ग अपवर्ग नीचे नरकादिकों को मानते ही हैं और उक्त बहु सम्मति से मानी हुई स्थिर पृथ्वी पर ही विश्वास करते हैं ।

अब यहां भूगोल भ्रमणवादी अपनी पक्ष साधन को कहता है कि तुमने बहुत से मतों से पृथ्वी को स्थिर और सूर्य को चलता बताया सो क्या बहुत से मूर्ख अनजानों की कही हुई वार्ता सत्यार्थ मानी जाती है जैसे कोई अनजान एक भेड़ बिना विचार कूए में गिरी उस के साथ अनेक भेड़ देखा देखी कूए में गिर पड़ीं तो क्या ज्ञान वालों को भी गिरना चाहिये इस कारण बहुमत से पृथ्वी स्थिर मानी हुई भी स्थिर नहीं है ।

प्रतिवादी कहता है ये तो आप का कहना सत्यार्थ है बहुमत अज्ञानी वा पक्षपातियों की बात कही हुई मानने के योग्य नहीं है ।

परन्तु आप को यह विचार करना तो असङ्गत नहीं था कि यह भेड़ चाल अज्ञानपन भारतवासी विद्वानों की बहुसम्मति पर पड़ता है वा पश्चिमी विद्वान जो कि भूगोल भ्रमण मानते हैं उन पर चरितार्थ होता है ।

विवेचन किये उन ही भू० भ्र० वादी पश्चिमी विद्वानों पर पदारोहण करती है सुनिये उन के अद्भुत आश्चर्यकारी कथन को जो उन्होंने अपनी ही लेखनी से उद्धृत किया है।

१—कोई पश्चिमी भूगोल भ्रमणवादी कहता है कि सूर्य स्थिर है पृथ्वी उस के गिर्द घूमती है जो पृथ्वी को स्थिर और सूर्य को चलायमान मानते हैं वह मूर्ख और गमार है देखो स्वीकृत नम्बर ५८ में एस० ए० हिल साहब का लेख।

२—कोई बडे नामी दूसरे विद्वान कहते हैं $\frac{1}{2}$ घण्टे में सूर्य १०००० दस हजार मील लिरा की तरफ दौड़ता चला जा रहा है देखो स्वीकृत नंबर ५६ हार्स साहब का लेख जिसको सर रौवर्ट ऐस० वाल ने अपनी रची पुस्तक में लिखा है।

१—कोई भू० गो० भ्र० वादी कहता है सूर्य तो स्थिर है लेकिन उसकी पृथ्वी प्रदक्षिणा ३६५$\frac{1}{4}$ दिन में पूरी कर लेती है।

२—कोई दूसरा पश्चिमी विद्वान कहता है सूर्य १ दिन में ४८०००० मील दौड़ता हुआ गमन करताहै।

नोट—स्थिर सूर्य की प्रदक्षिणा करना पृथ्वी का किसी प्रकार से सम्भव है लेकिन चलते हुये महा वेग से सूर्य की प्रदक्षिणा करना महा असम्भव है जिस पर ३६५$\frac{1}{4}$ दिन का कहना अत्यन्त ही असत्

है क्योंकि बिना सर्व तरफ चले तो प्रदक्षिणा होय नहीं और सूर्य की चाल के विमुख चाल जो एक दिन में उक्त कहो तव विमुख जो १८२$\frac{५}{८}$ दिन तक सूर्य तो पश्चिम को जाय उसके विमुख पृथ्वी पूर्व को जाय फिर प्रदक्षिणा कैसे दी जाय यह असंभव है ऐसे असम्भव लेख को कौनसा बुद्धिमान है जो स्वीकार करके इसकाविश्वास करें ।

१—कोई पश्चिमी भू० गो० भ्र० वादी कहता है पृथ्वी से सूर्य १३००००० तेरह लाख गुणा है देखो नं० ५३ दूसरा कहता है १५००००० लाख गुणा है देखो नं० ५४

नोट—इस गणित में १३०००००००० एक अरब साठ करोड़ मील का अन्तर है तासे बड़ी भारी भूल है यह गणित से बाधित है गणित विद्या तो ऐसी सत्यता को धारण करती है कि जिस की करोड़ों अरबों मील में भी यदि ५ या ७ मील की भूल होय तो वह गणित अप्रमाण समझी जाती है ऐसी उक्त गणित की पोल तो गुणा जानने वाले बालक भी स्वीकार नहीं करते एसी मन गढंत तो इन विद्वानों की आकाश की पोल ही में पोल चल सकती है जो अपनी रची पुस्तकों में मन मानी लिख दई हैं विवेकी विद्वान निष्पक्ष तो इस को बिना विवेचन किये कभी स्वीकार न करेंगे इस में गणित बाधित दोष है ।

५—कोई भू० गो० भ्र० वादी कहता है देखो नं० ३६ पृथ्वी से चंद्रमा २४०००० दो लाख चालीस हज़ार मील है।

दूसरा कहता है २३०००० मील २२१००० व २५३००० दो लाख तिरेपन हज़ार मील दूर है देखो नं० ४१ इस भांति परस्पर दूरी के नापने में अन्तर है अब किस की नाप को सत्य मान कर प्रतीति करी जाय इस में भी गणित नाप दोष है।

६—कोई पश्चिमी भू० गो० भ्र० वादी कहता है सूर्य की आकर्षण शक्ति पृथ्वी को इधर उधर नहीं जाने देती है देखो नम्बर स्वीकृत २१

दूसरा कहता है सूर्य के आस पास पृथ्वी अण्डाकार घूमती है जब अण्डाकार घूमती है देखो नं० १७ तो उस को कहीं दूर और कहीं पास अवश्य आना पड़ैगा इन दोनों वार्ताओं में किस को सत्य मानी जाय इस में विरुद्ध दोष है।

७—कोई भू० गो० भ्र० वादी कहते हैं चंद्रमा से पृथ्वी के साथ में ज्वार भाटा होते हैं।

दूसरा कहता है पृथ्वी से चंद्रमा में ज्वार भाटा होते थे पहले चंद्रमा अग्नि रूप था अब ठंडा हो गया है अब उस के भीतर ज्वार भाटा होते होंगे देखो नं० ३८ ऐसे अनिश्चित परस्पर न मिलाते हुए कहते हैं अब किस की प्रतीति करी जाये।

८—कोई भूगोल भ्रमण वादी पश्चिमी विद्वान कहता है हाईलैन्ड की पृथ्वी समुद्र के जल से कुछ नीची है इस कारण उस में पानी भर जाने के भय से उस के बंद बांध रक्खे हैं देखो नं० ३३

दूसरा कहता है दक्षिणी उत्तरी पोलों पर १३ तेरह तेरह मील पृथ्वी नीची है इसी कारण दक्षिण उत्तर का व्यास २६ मील कम है भावार्थ, ७९००-मील है पूर्व पश्चिम, ७९२६ मील है देखो नं १९ तव १३ मील गहरी पृथ्वी में वहां समुद्र के जल को कौन रोक सकता है फिर वहां बंद किसी ने नहीं बांधे परन्तु यदि उन पोलों में पानी भरा है तो व्यास ७९२६ मील कहना था फिर भी कोई पक्षपात कर कहै वहां कोई नहीं रहता आबादी नहीं है किस लिये बंद बांधे इस कारण वहां बरफ वा पृथ्वी बतायें तो व्यास७९२६ मील से अधिक होता है इस से उत्तर दक्षिण ७९०० मील का कहना वाधित है देखो नं० १९

ऐसे विरुद्ध लेख बिना विचारे कौन सा धीमान है जो इस की प्रतीत करे।

कोई एक पश्चिमी विद्वान भू को गोल भ्रमण करती मानते हुये कहते हैं कि सम्पूर्ण पिण्डों में आकर्षण शक्ति है वह पिण्ड के केन्द्र स्थान में ठहरी है उसी से उस पिण्ड में छोटे में थोड़ा और

बड़े में अधिक वज़न होता है और उसी शक्ति से दूसरे छोटे पिण्ड को अपनी ओर पिण्ड खींच लेता है देखो स्वीकृत नं० २०-२३

दूसरा कोई विद्वान कहता है ज्यों २ एक पिंड से दूसरा दूर जाता है त्यों २ उस में वज़न कम हो जाता है। देखो नं० २६

तीसरा कहता है ज्यों२ दूर होता है त्यों२ वज़न अधिक हो जाता है। देखो नं २४

चौथा कहता है दूर होने पर तथा पास होने पर वज़न थोड़ा होगा। देखो नं० ४८

पांचवां कहता है वज़न पदार्थ में है नहीं क्यों कि नली से हवा निकास कर यदि १ अधिक बड़ा मनोटा या छोटा वज़न वाला १ छटांक गेरा जाय तो एक साथ ही ज़मीन पर पड़ते हैं इस कहने वाले ने आकर्षण पिंडों को खींचती है यह सब बाधित कर दिया देखो नं० २५

ऐसे भूगोल भ्रमण वादी महाशय परस्पर विरुद्ध बिना पते की वार्ता कहते हैं तब कौन सा विद्वान है जो बिना विवेचन किये इस पर विश्वास कर आत्मा के अस्तित्व को छोड़ देहात्मा वादी बन कर इस पर पृथ्वी को गोल आकाश के मध्य भ्रमण करती मान कर आत्मा के शुभ अशुभ क्रिया के फल स्वर्ग नरक का लोप, क्रिया के लोप से

आत्मा का भी लोप ऐसा केवल विषय कषाय के लोभ वाले मत को कौन स्वीकार करे जो कि पर-लोक में महा दुःख का कारण है इस से तो विमुख होय जप तप संयम नियम शास्त्र स्वाध्याय कर कर आत्म कल्याण करना ही श्रेयष्कर है।

॥इति॥

१

भास्कराचार्य कृत सिद्धान्त शिरोमणि के

अनुसार भूरूपाकृति
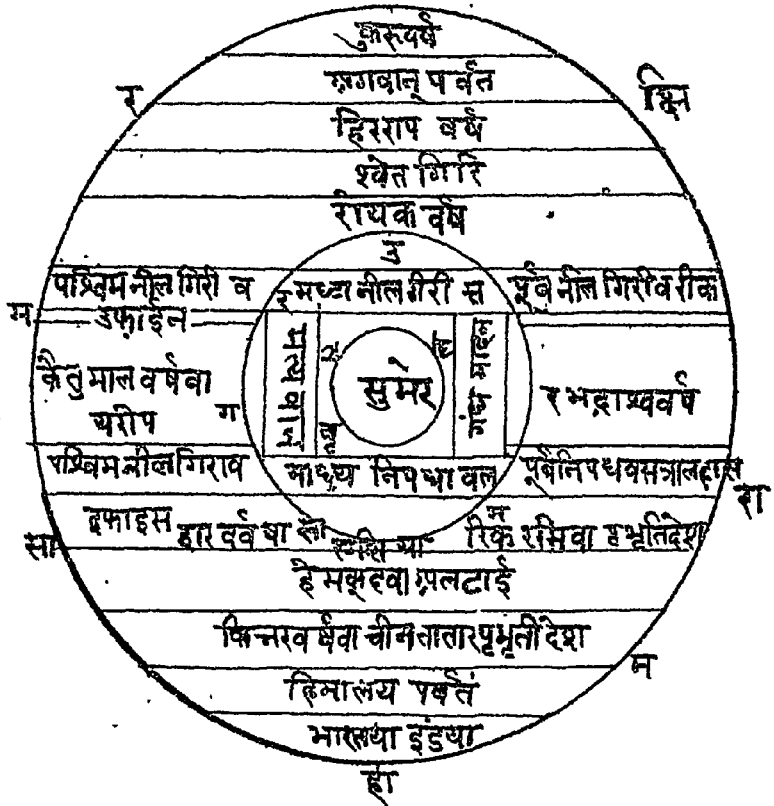
इस नक़शे में यूरप रुस या चीन तातार आदि देशों के नाम टीकाकार के मन घरन्त है वह भास्कराचार्य के मत से असंबन्ध है ।

कोई ज्योतिषाचार्य
भूमि को केन्द्र मानकर नीचे लिखे क्रम से ग्रह नक्षत्रों की कक्षा
वृताकार मानते हैं

३

कोई ज्योतिषाचार्य

भूमि को केन्द्र मानकर नीचे लिखे क्रम से ग्रह नक्षत्रों की

कक्षाकृता कर मानते हैं

कोई ज्योतिषाचार्य
भूमि को केन्द्र मानकर नीचे लिखे क्रम से ग्रह नक्षत्रों की
कक्षावृत्ताकार मानते हैं

५
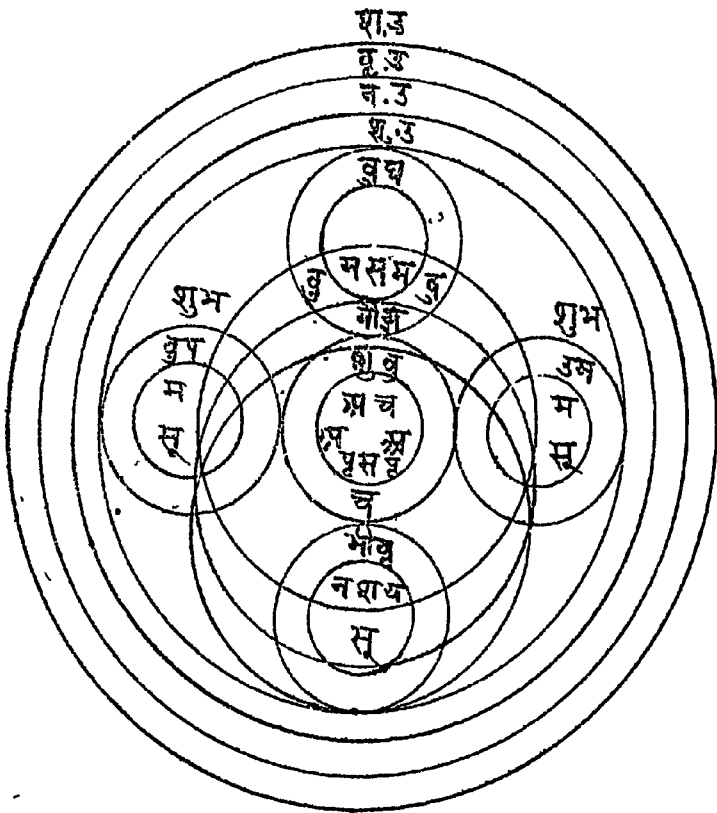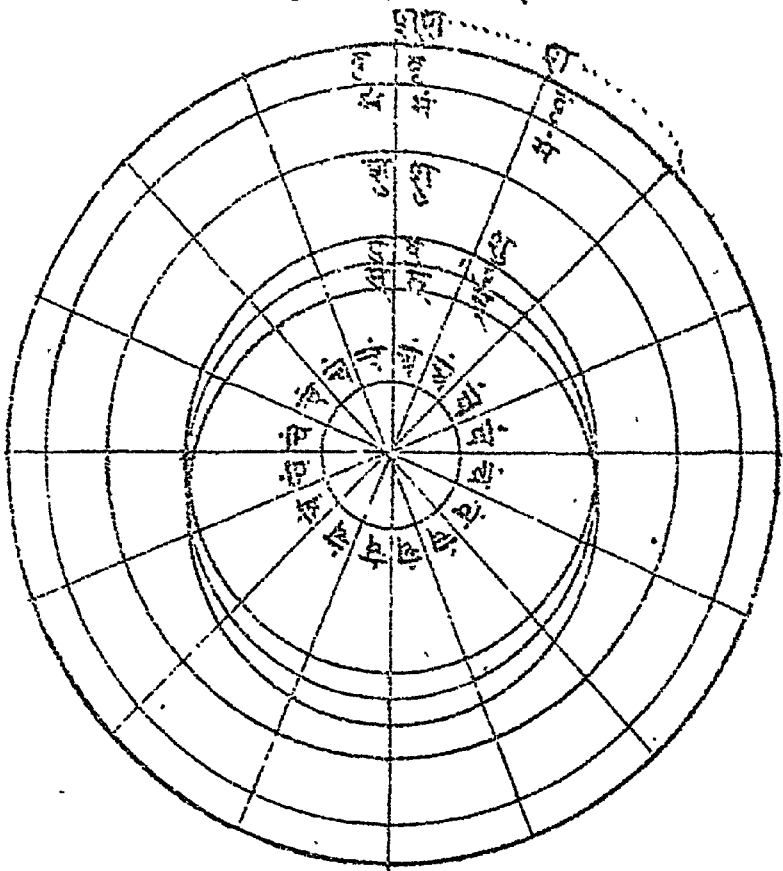
कोई ज्योतिषाचार्य

भूमि को केन्द्र मानकर नीचे लिखे क्रम से ग्रह नक्षत्रों की
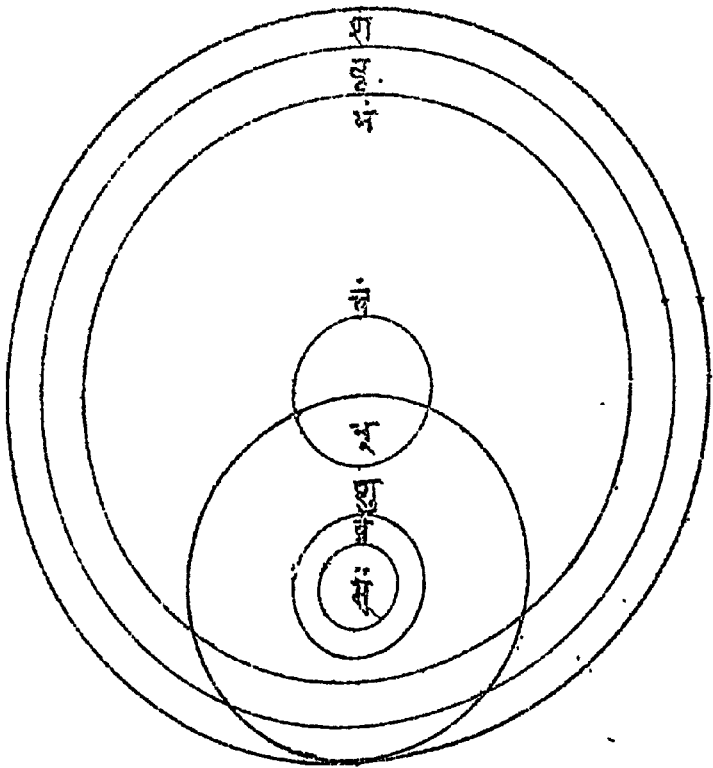
कक्षावृत्ताकार मानते हैं

कोई ज्योतिषाचार्य

भूमिको केन्द्र मानकर नीचेलिखे क्रमसे ग्रह नक्षत्रों की कक्षा वृत्ताकार मानते हैं
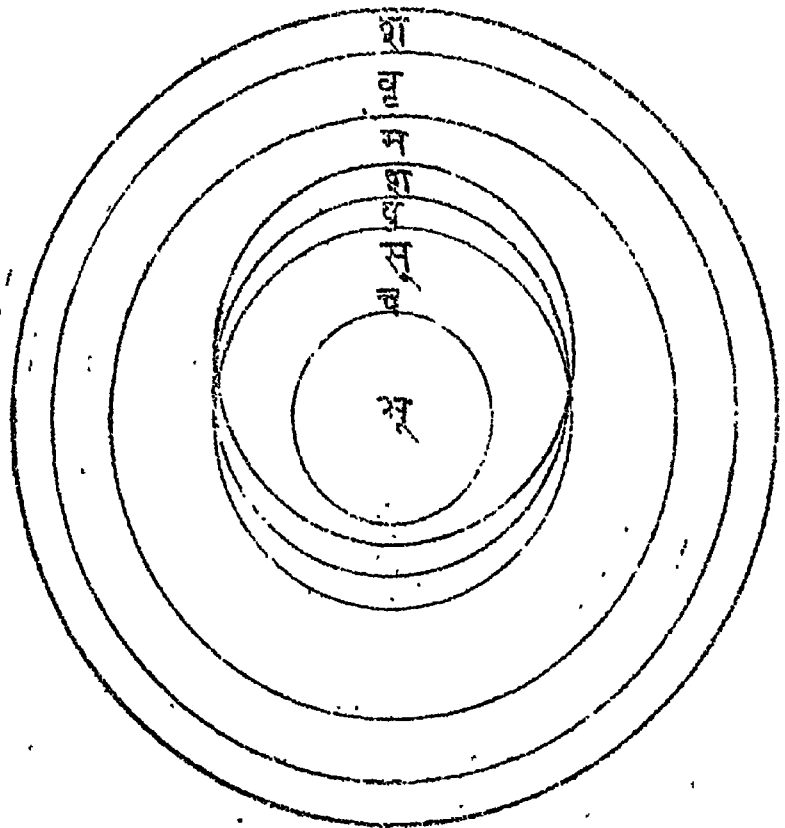
कोई ज्योतिषाचार्य

भूमिको केन्द्र मानकर नीचे लिखे क्रम से ग्रह नक्षत्रों की कक्षा
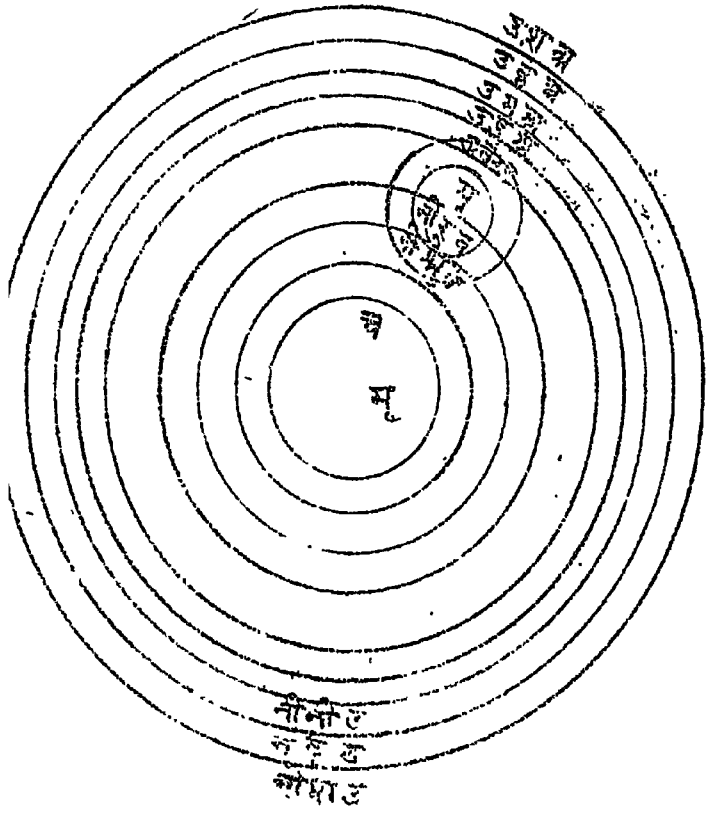
वृत्ताकार मानते हैं

कोई ज्योतिषाचार्य

भूमिको केन्द्रमानकर नीचे लिखे क्रमसे ग्रह नक्षत्रों की

कक्षावृत्ताकर मानते हैं

विशेष सूचना।

प्रिय पाठकों ! भू अथवा सूर्य, भ्रमण करता है या स्थिर है। इससे कोई शरीर सम्बन्ध या लौकिक व्यवहार में विशेष हानि नहीं है, ऐसा कोई कहीं उससे कहा जाता है कि यह माना परन्तु जीव के अस्तित्व मानने वाले आस्तिकों को तो पूरी हानि है। क्योंकि आकाश के मध्य भू को भ्रमण के विकल्प करने से पृथिवी के ऊपर स्वर्ग अपवर्ग सुख के स्थान और नीचे नरक निगोद दुख के स्थान में जो आत्मा के श्रेष्ठ अश्रेष्ठ कर्म के फल भोगता है तिनका लोप होता है और श्रेष्ठ अश्रेष्ठ कर्म के लोप से आत्मा का लोप। तब नास्तिक मत जो आत्मा को न मानने वाले का आविर्भाव होते हुए सब धर्म कर्म की चर्चा ही उठी जाती है। क्योंकि आत्मा के सुख की प्राप्ति दुख की निवृति के लिये ही सर्व धर्म कर्म कार्य किया जाता है, जब आत्मा ही नहीं तब सर्व कर्तव्य ही व्यर्थ हुए।

इस कारण भू ज्योतिष चक्र का विवेचन करना परमावश्यकीय कार्य है इसके बिना विवेचन किये सर्व ही धर्म कर्म कार्य निष्फल हैं। इसी कारण सामान्य विवेचन कर चुके हैं, अब विशेष दृष्टि कालों को विस्तार पूर्वक तृतीयादि भाग में कथन किया जायगा। जिसका विवेचन कर भू स्थिर पर दृढ़ श्रद्धा न करना आस्तिकों को परम कल्याण का मार्ग है।